17 अगस्त 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के ग्रंथाधिराज समयसार पर प्रवचनों का प्रसारण
अब **अरिहन्त चैनल** पर
अरिहंत प्रतिदिन
प्रात: 6:10 से 6:40 तक

वर्ष : 43, अंक : 10
अगस्त (द्वितीय), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

● श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर की साप्ताहिक गोष्ठियों के अन्तर्गत दिनांक 2 अगस्त को **पंच परमेष्ठी : एक अनुशीलन** विषय पर गोष्ठी का आयोजन दो सत्रों में हुआ।

प्रथम सत्र में गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ थे।

इस अवसर पर महावीर भोकरे ने णमोकार मंत्र का उद्भव व प्रतिपाद्य, द्रव्य जैन ने अरहंत-सिद्ध परमेष्ठी का स्वरूप, अशेष जैन विदिशा ने आचार्य-उपाध्याय-साधु परमेष्ठी का स्वरूप, श्रेयांस जैन ने पंच परमेष्ठी में देव-गुरु का विभाजन एवं हर्षित जैन ने पंच परमेष्ठी से प्रयोजन सिद्धि विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

मंगलाचरण गौतमगणधर प्रधान ने एवं संचालन अर्पित जैन ने किया।

द्वितीय सत्र में अध्यक्षता पण्डित सुनीलजी जैनापुरे ने की।

इस अवसर पर केयूर जैन ने पंचपरमेष्ठी के पूज्यत्व का कारण, सुष्मित जैन ने पंचपरमेष्ठी की दुर्लभता, दिव्यांश जैन अलवर ने पंचपरमेष्ठी का स्वरूप : अनुयोगों के परिप्रेक्ष्य में, एकांश जैन ने पंचपरमेष्ठी का अन्यथा स्वरूप एवं प्रतीक जैन ने पंच परमेष्ठी की उपयोगिता क्यों और कब तक? विषय पर अपने मनोभाव व्यक्त किये।

मंगलाचरण हर्ष जैन फुटेरा ने एवं संचालन संयम जैन दिल्ली ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री एवं गौरवजी शास्त्री ने किया।

● दिनांक 9 अगस्त को **रक्षाबंधन पर्व धर्म का, रक्षा का त्यौहार महान** विषय पर गोष्ठी का आयोजन दो सत्रों में हुआ।

प्रथम सत्र में गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर थे।

इस अवसर पर अक्षय जैन खड़ैरी ने **पर्व : क्या, कितने और क्यों?**, निश्चल जैन दिल्ली ने **रक्षाबंधन की कथा**, एकाग्र जैन ने **जैनेतर कथाओं से तुलना**, आदित्य जैन ने **अक्षम्य अपराध क्या?** एवं रितेश जैन ने **जागृत विवेक** विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण आकाश जैन कोटा ने एवं संचालन आयुष जैन जबलपुर ने किया।

द्वितीय सत्र के अध्यक्ष पण्डित विक्रांतजी पाटनी झालरापाटन थे।

(शेष पृष्ठ 5 पर...)

रक्षाबंधन पर्व शिविर सानन्द संपन्न

खनियांधाना (म.प्र.) : रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन नया मंदिर ट्रस्ट अंतर्गत संचालित श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान नन्दीश्वर दिगम्बर जैन विद्यापीठ चेतनबाग द्वारा दिनांक 1 से 3 अगस्त तक रक्षाबंधन पर्व शिविर एवं विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

प्रथम दिन डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में उद्घाटन समारोह हुआ, जिसके मुख्य अतिथि श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई एवं विशिष्ट अतिथि श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर थे। कार्यक्रम का मंगलाचरण कु. एनी जैन जयपुर व स्वागत गीत कु. विशुद्धि जैन सरल खनियांधाना ने किया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' अमायन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, डॉ. राकेशजी नागपुर, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, ब्र. हेमचंदजी देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित संजयजी जेवर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित राजकुमारजी उदयपुर, पण्डित राजकुमारजी गुना, पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर, चौधरी रतनचंदजी भोपाल, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित अजितजी अलवर, पण्डित पीयूषजी जयपुर, ब्र. सुनीलजी शिवपुरी, पण्डित सौरभजी इन्दौर, डॉ. प्रवीणजी बांसवाड़ा, पण्डित गणतंत्रजी आगरा, पण्डित संयमजी नागपुर, पण्डित पुनीतजी भोपाल, पण्डित संजयजी साव खनियांधाना, डॉ. विवेकजी छिन्दवाड़ा, डॉ. अंकितजी लूणदा, पण्डित सचिनजी चैतन्यधाम, पण्डित तपिशजी उदयपुर, पण्डित शनिजी खनियांधाना, पण्डित चर्चितजी खनियांधाना, पण्डित अनुभवजी खनियांधाना, ब्र. निखिलजी शास्त्री मुम्बई, डॉ. आरती दीदी छिन्दवाड़ा, ब्र. प्रीति दीदी खनियांधाना, ब्र. सहजता दीदी सिंगोड़ी, विदुषी राजकुमारी दीदी दिल्ली, विदुषी स्वर्णलताजी नागपुर, डॉ. ममताजी उदयपुर, ब्र. प्रियंका दीदी खनियांधाना आदि विद्वानों का प्रवचन व गोष्ठी के माध्यम से लाभ मिला।

रात्रिकालीन कार्यक्रमों में प्रथम व द्वितीय दिन रक्षाबंधन पर्व कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। रक्षाबंधन के दिन ही बाबूभाई मेहता फतेहपुर

(शेष पृष्ठ 5 पर...)

③ सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रथम अध्याय (पीठबंध प्ररूपण) का सार –

मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ के प्रारम्भ में मंगलाचरण करते हुए पण्डितजी ने सर्वप्रथम उस वीतराग विज्ञान को नमस्कार किया, जिसके कारण अरहंतादि महान हुए हैं। इस महान ग्रंथ को लिखने का प्रयोजन बाह्य में संपूर्ण समाज का मिल जाना और अन्तर में अनंत गुणसमाज मिलकर निजपद रूपी राज्य प्राप्त कर लेना है।

मंगलाचरण के उपरांत णमोकार महामंत्र को देशभाषा में प्रस्तुत करते हुए पंच परमेष्ठियों के स्वरूप को बताया। वहाँ वे लिखते हैं – ''अरहंतों के स्वरूप का **विचार** करते हैं...सिद्धों का स्वरूप **ध्याते** हैं...आचार्य–उपाध्याय–साधु के स्वरूप का **अवलोकन** करते हैं।''

अरहंतों का स्वरूप विचार करने योग्य है, सिद्धों जैसा आत्मा का स्वरूप है, इसलिये उनको ध्याते हैं और आचार्य–उपाध्याय–साधु जगत में प्रकट दिखायी देते हैं, इसलिये उनके स्वरूप का अवलोकन – इसप्रकार इस प्रकरण में पण्डितजी द्वारा प्रयोग किये गये उक्त शब्दों से उनके चिंतन व लेखन की सूक्ष्मता का पता लगता है। पंच परमेष्ठियों के अंतरंग एवं बहिरंग स्वरूप को उन्होंने अत्यंत सूक्ष्म रीति से प्रतिपादित किया है। तदुपरांत पंच परमेष्ठियों की पूज्यता का कारण रागादि की हीनता/अभाव व ज्ञान की विशेषता/पूर्णता को बताया है। इन्हीं दो कारणों से कोई भी व्यक्ति पूज्य होता है। पंच परमेष्ठियों में ये कारण पाये जाने से वे पूज्यता को प्राप्त हुए हैं।

अनेक तर्कों–युक्तियों से इनका पूज्यत्वपना सिद्ध करने के उपरांत 24 तीर्थंकर, विद्यमान 20 तीर्थंकर, जिनधर्म, जिनवाणी, त्रिलोक संबंधी चैत्यालय व जिनप्रतिमाएं आदि सभी को वन्दन किया।

पश्चात् अरहंतादि से प्रयोजन की सिद्धि करते हुए वे लिखते हैं कि ''अरहंतादि के आकार का अवलोकन या स्वरूप विचार से...वीतराग विशेष ज्ञानरूप प्रयोजन की सिद्धि होती है।'' लौकिक प्रयोजन–सिद्धि के संदर्भ में भी पण्डितजी का कहना है कि ''अरहंतादि पंच परमेष्ठियों की पूजन–भक्ति से स्वयमेव ही पुण्य प्रकृतियों का विशेष बंध होने से अनुकूलताओं की प्राप्ति होती है। विशेष ध्यान आकर्षित करते हुए इस प्रकरण के अंत में कुछ कठोर भाषा का प्रयोग करते हुए वे लिखते हैं कि ''इस (लौकिक) प्रयोजन से अरहंतादिक की भक्ति करने से पापबंध ही होता है, इसलिये अपने को इस (लौकिक) प्रयोजन का अर्थी होना योग्य नहीं है।''

इसके पश्चात् पण्डितजी ने मंगलाचरण करने के विविध कारण बताये तथा इस संबंध में उठने वाले विविध प्रश्नों को उठाकर उनका समाधान किया तथा आगे चलकर स्वयं द्वारा लिखे जा रहे इस मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ की प्रामाणिकता को सिद्ध करने के लिये तीर्थंकर परमात्माओं से वर्तमान तक की अविच्छिन्न श्रुत परम्परा को बताया। फिर स्वयं द्वारा किये गये चारों अनुयोगों के विविध ग्रंथों का नामोल्लेख किया। स्वयं द्वारा सैंकड़ों ग्रंथों का अभ्यास करने के बाद भी वे लिखते हैं कि इस निकृष्ट समय में हम जैसे मन्दबुद्धियों से भी हीनबुद्धि के धनी बहुत जन दिखायी देते हैं, जिन्हें प्राकृत संस्कृत का विशेष अभ्यास नहीं है, उनके लिये हमारे द्वारा यह देशभाषामय ग्रंथ बनाया जा रहा है।

जैन शास्त्रों में असत्यपद–रचना के निषेध की बात बताते हुए वे कहते हैं कि यदि मूल परम्परा में किसी प्रकार कोई तीव्र कषाय से असत्य पदों की मिलावट करे तो आगे आने वाले विद्वान और ज्ञानीजन उस गलत परम्परा को चलने नहीं देंगे। सच्चे और झूठे की पहिचान कैसे हो इस संदर्भ में पण्डितजी लिखते हैं कि ''जैसे सच्चे मोतियों के गहने में झूठे मोती मिला दे, परन्तु झलक नहीं मिलती... उसीप्रकार कोई सत्यार्थ पदों के समूहरूप जैनशास्त्रों में असत्यार्थ पद मिलाये...तो कषाय मिटाने तथा लौकिक कार्य घटाने का प्रयोजन नहीं मिलता।'' इसप्रकार कोई भी गलत परम्परा लम्बे समय तक नहीं चल सकेगी।

इसके आगे पण्डितजी लिखते हैं कि ''हमें भी विशेष ज्ञान नहीं है और जिनआज्ञा भंग करने का बहुत भय है..., (फिर भी) ग्रंथ करने का साहस करते हैं। इसलिये इस ग्रंथ में जैसा पूर्व ग्रंथों में वर्णन है वैसा ही वर्णन करेंगे।'' यहाँ पण्डितजी के शब्दों में लघुता प्रदर्शन के साथ–साथ सत्य वर्णन करने की प्रतिज्ञा भी स्पष्ट झलकती है। इसके बाद भी वे कहते हैं कि यदि मुझसे कहीं कोई सूक्ष्म अर्थ का अन्यथा वर्णन हो जाये तो विशेष बुद्धिमान जीव उसे सुधारकर अर्थ ग्रहण करें ऐसी मेरी प्रार्थना है।

हमें कैसे शास्त्रों को वांचना और सुनना चाहिये, इसका निर्णय कराने के अर्थ वे लिखते हैं – जिन ग्रंथों में राग–द्वेष का निषेधकर वीतराग भाव का प्रयोजन प्रकट किया हो, उन्हें ही पढना–सुनना चाहिये तथा जिनमें शृंगार–भोग–कौतुहल, हिंसा, अतत्वश्रद्धानादि के द्वारा राग–द्वेष–मोह भाव का पोषण किया हो, वे शास्त्र नहीं शस्त्र हैं; अत: उनका पढना–सुनना योग्य नहीं है। इस प्रकार जहाँ रागादि घटाने और वीतराग भाव का पोषण हो – ऐसे शास्त्रों का ही हमारे द्वारा अभ्यास किया जाना चाहिये। **(क्रमश:)**

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

3

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 14 – भावाय, चित्स्वभावाय, सर्वभावान्तरच्छिदे और स्वानुभूत्या चकासते कहकर आत्मा के किस स्वभाव को किस कलश में कहा गया है?

उत्तर – इन चार विशेषणों द्वारा आत्मा के द्रव्य-गुण और पर्याय स्वभाव को समयसार की आत्मख्याति टीका के प्रथम कलश में कहा गया है।

प्रश्न 15 – द्रव्य, गुण, पर्याय से आत्मा को जानने से क्या लाभ है?

उत्तर – मोह का नाश।

प्रश्न 16 – समय शब्द के मूलत: दो अर्थ कौन-कौनसे हैं?

उत्तर – आत्मा और छह द्रव्य।

प्रश्न 17 – समय शब्द की व्युत्पत्ति के आधार पर आत्मा और छह द्रव्य अर्थ कैसे निकलते हैं?

उत्तर – समय शब्द 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'अय्' धातु से बना है। 'अय्' का अर्थ गमन भी होता है और ज्ञान भी होता है। 'सम' का अर्थ 'एक साथ' होता है। इसप्रकार जिस वस्तु में एक ही काल में जानना (ज्ञान करना) और परिणमन करना – ये दोनों क्रियाएं पायी जावें, वह ही समय है। चूंकि जीव प्रतिसमय जानता भी है और परिणमन भी करता है, अत: जीव (आत्मा) नामक पदार्थ ही समय है। दूसरे अर्थ के अनुसार जो एकीभाव से अपने गुण-पर्यायों को प्राप्त हो, उसे समय कहते हैं – इस व्याख्या के अनुसार समय शब्द का अर्थ छहों द्रव्य लिया है।

प्रश्न 18 – यदि समय का अर्थ छह द्रव्य करते हैं, तो समयसार का अर्थ क्या होता है?

उत्तर – यदि समय का अर्थ छह द्रव्य करते हैं, तो सार का अर्थ छहों द्रव्यों में **सर्वश्रेष्ठ सारभूत पदार्थ आत्मा होता है।**

प्रश्न 19 – यदि समय का अर्थ आत्मा करते हैं, तो समयसार का क्या अर्थ होता है?

उत्तर – यदि समय का अर्थ आत्मा (जीवद्रव्य) करते हैं, तो सार का अर्थ द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म से रहित शुद्धात्मा होता है।

प्रश्न 20 – टिप्पणी लिखिए –

(1) भावाय (2) चित्स्वभावाय

(3) सर्वभावान्तरच्छिदे (4) स्वानुभूत्याचकासते

उत्तर – (1) भावाय – भगवान आत्मा भावस्वरूप है, सत्ता स्वरूप है, सत् है। सत् द्रव्य का लक्षण है। इसप्रकार 'भाव' विशेषण के द्वारा सर्वप्रथम भगवान आत्मा के द्रव्य स्वभाव को बताकर उसके अस्तित्व की स्थापना की गई है; क्योंकि जिसका जगत में अस्तित्व न हो, उसका गुणानुवाद काल्पनिक ही सिद्ध होता है। किसी चीज का अस्तित्व सिद्ध हुए बिना उसकी चर्चा ही संभव नहीं है।

(2) चित्स्वभावाय – सत्ता स्वरूप भगवान आत्मा चैतन्य स्वभावी है।। जानने-देखने के स्वभाव वाला है। जानना-देखना आत्मा का सहज स्वभाव है, असाधारण भाव है, जो सभी जीवद्रव्य (आत्माओं) में पाया जाता है, पुद्गलादि अजीव द्रव्यों में नहीं। इसीकारण यह आत्मा के पहिचान का चिह्न है। इसके माध्यम से अजीवादि परद्रव्यों से भिन्न जाना जा सकता है। इसप्रकार चित्स्वभावाय कहकर भगवान आत्मा के गुण स्वभाव को स्पष्ट किया गया है कि आत्मा ज्ञानादि अनन्त गुणों का अखण्ड पिण्ड है।

(3) सर्वभावान्तरच्छिदे – भगवान आत्मा सब पदार्थों को जानने-देखने वाला है, सर्वज्ञ स्वभावी है। इसप्रकार इस विशेषण द्वारा पर्याय स्वभाव (सर्वज्ञ स्वभाव) को बताया गया है। यहाँ प्रगट पर्याय (सर्वज्ञ पर्याय) सहित भगवान आत्मा की बात नहीं की गई है, अपितु सर्वज्ञ स्वभावी त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा की बात की गई है।

(4) स्वानुभूत्या चकासते – यह भगवान आत्मा स्वानुभूति के द्वारा जाना जाता है। यह आत्मा व्रत-उपवासादि क्रियाकाण्ड से पकड़ में आने वाला नहीं, इन्द्रियगम्य भी नहीं, अनुमानगम्य भी नहीं है; वह तो स्वानुभूति के अतिरिक्त अन्य उपायों से नहीं जाना जा सकता। इस विशेषण द्वारा भी आत्मा के पर्याय स्वभाव को बताया गया है।

प्रश्न 21 – द्वितीय कलश में आशीर्वचन रूप से किसे नमस्कार किया है?

उत्तर – सरस्वती की मूर्ति को।

प्रश्न 22 – सरस्वती की मूर्ति से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – वस्तु में होने वाले अनन्त धर्मों को 'स्यात्' पद से एक धर्मी में अविरोध रूप से साधने वाली सरस्वती की मूर्ति है। यह ज्ञानरूप और वचनरूप होती है। **ज्ञानरूप –** ज्ञान में दो भेद हैं – प्रथम तो अनन्त धर्म सहित आत्मतत्त्व को प्रत्यक्ष देखने वाला सम्पूर्ण ज्ञान केवलज्ञान सरस्वती की मूर्ति है, क्योंकि उसमें समस्त पदार्थ प्रत्यक्ष प्रतिभासित होते हैं। द्वितीय-आत्मतत्त्व को परोक्ष देखने वाला श्रुतज्ञान भी सरस्वती की मूर्ति है। **वचनरूप –** द्रव्यश्रुत वचनरूप है, वह भी सरस्वती की मूर्ति है; क्योंकि वह वचनों द्वारा अनेक धर्मवाले आत्मा को बतलाता है।

(क्रमश:)

28वाँ ई-शिक्षण शिविर संपन्न

चैतन्यधाम-अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा गुजरात के तत्त्वावधान में दिनांक 9 से 12 अगस्त तक 28वाँ ई-शिक्षण शिविर आयोजित हुआ, जिसमें चौंसठ ऋद्धि विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पूजन-विधान के पश्चात् सर्वप्रथम गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मोक्षमार्गप्रकाशक पर सी.डी. प्रवचन आयोजित हुए। तत्पश्चात् पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई, पण्डित शैलेषभाई तलोद, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में पण्डित संजयजी शास्त्री सिद्धार्थी इन्दौर द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए।

शिविर के उद्घाटनकर्ता श्री सनतकुमार नाथालाल शाह हिम्मतनगर व श्री प्रकाशभाई गम्भीरमलजी जैन वस्त्रापुर थे। विधान उद्घाटनकर्ता श्री चन्द्रकांत डाह्यालाल शाह अहमदाबाद व श्री सुभाषचंद्र सोमचंद कोटडिया वापी थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य स्थानीय विद्वान पण्डित सचिनजी शास्त्री व पण्डित मनीषजी सिद्धांत द्वारा संपन्न हुये।

अन्त में श्री अनिलभाई ताराचंद गांधी एवं मुकेशभाई पोपटलाल शाह अ.भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा गुजरात ने सभी विद्वानों एवं साधर्मियों का आभार व्यक्त किया।

शोक समाचार

(1) श्री धरसेन आचार्य जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा के प्राचार्य पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के पिताजी **बण्डा-सागर (म.प्र.) निवासी श्री राकेशजी जैन** का दिनांक 9 अगस्त को 62 वर्ष की आयु में शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप अत्यंत सरल परिणामी एवं स्वाध्यायी थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 501/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) भावनगर (गुज.) मुमुक्षु मण्डल के प्रमुख, सोनगढ दिगम्बर जैन मंदिर के ट्रस्टी, भावनगर वीतराग सत्साहित्य ट्रस्ट के प्रमुख **श्री हीरालालजी काला** का दिनांक 5 अगस्त को 89 वर्ष की आयु में शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप नियमित स्वाध्याय करते थे तथा तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार में सदैव सक्रिय रहते थे। आपके द्वारा प्राचीन पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिये भी बहुत कार्य किया गया।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

बाह्यक्रिया पर तो इनकी दृष्टि है और परिणाम सुधरने-बिगड़ने का विचार नहीं है। और यदि परिणामों का भी विचार हो तो जैसे अपने परिणाम होते दिखायी दें उन्हीं पर दृष्टि रहती है, परन्तु उन परिणामों की परम्परा का विचार करने पर अभिप्राय में जो वासना है उसका विचार नहीं करते। और फल लगता है सो अभिप्राय में जो वासना है उसका लगता है।...

- मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 238

साप्ताहिक ऑनलाइन गोष्ठी संपन्न

गजपंथा-नासिक (महा.) : यहाँ देशभूषण-कुलभूषण छात्रावास में दिनांक 12 जुलाई को **'पांच पाप'** विषय पर प्रथम ऑनलाइन साप्ताहिक गोष्ठी आयोजित की गई।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री विजयकुमारजी जैन हाथरसवाले मुम्बई, मुख्य अतिथि श्री अजितजी बड़ौदा व श्री विजयभाई बोटादरा सोनगढ, आमंत्रणकर्ता श्री सुमेरचंदजी बेलोकर थे। निर्णायक के रूप में विदुषी जीनल शाह देवलाली, पण्डित अविनाशजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित शुभमजी शास्त्री गजपंथा उपस्थित थे। अनेक महानुभावों ने अपने विचार रखे।

गोष्ठी में प्रथम स्थान अनुराग कुलभूषण बंड औरंगाबाद ने प्राप्त किया। गोष्ठी का मंगलाचरण समय गाडेकर औरंगाबाद ने एवं संचालन प्रतीक हालटिके अम्बड जालना व सिद्धेश जैन सावदा जलगांव ने किया। आभार प्रदर्शन श्री कुलभूषणजी वाकळे ने किया।

● दिनांक 26 जुलाई को **'चार गति'** विषय पर द्वितीय ऑनलाइन साप्ताहिक गोष्ठी आयोजित की गई।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री भावेशभाई शाह जलगांव, मुख्य अतिथि श्री पंकजभाई कामदार मुम्बई एवं आमंत्रणकर्ता श्री राजेशभाई शाह थे। निर्णायक के रूप में पण्डित संजयजी राउत, विदुषी जीनलबेन देवलाली, पण्डित शुभमजी शास्त्री गजपंथा एवं आत्मार्थी वंशिका जैन गंजबासौदा आदि महानुभाव उपस्थित थे।

गोष्ठी में प्रथम स्थान प्रतीक गणेश हालटिके ने प्राप्त किया। गोष्ठी का मंगलाचरण सम्यक गडकर खामगांव ने एवं संचालन अनुराग कुलभूषण बण्ड औरंगाबाद व आलोक गडेकर औरंगाबाद ने किया। आभार प्रदर्शन श्री सुमेरचंदजी बेलोकर मुम्बई ने किया।

● दिनांक 9 अगस्त को **'पांच परमेष्ठी'** विषय पर तृतीय ऑनलाइन साप्ताहिक गोष्ठी आयोजित की गई।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री अशोकभाई घीया देवलाली, मुख्य अतिथि श्री उमेशभाई श्रीपालन चेन्नई एवं आमंत्रणकर्ता श्री फूलचंदजी मुक्किवार हिंगोली थे। निर्णायक के रूप में श्री गुलाबचंदजी बोरालकर, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मुम्बई उपस्थित थे।

गोष्ठी में प्रथम स्थान ज्ञायक सम्यक् गढकर ने प्राप्त किया। गोष्ठी का मंगलाचरण ज्ञायक गोम्मटेश बुर्ले अम्बड जालना ने किया। गोष्ठी के आयोजक पण्डित शुभमजी शास्त्री एवं श्री कुलभूषण वाकळे गजपंथा एवं संचालक ज्ञायक प्रतीक हालटिके जालना व ज्ञायक समयजी गाडेकर औरंगाबाद थे। आभार प्रदर्शन श्री सुमेरचंदजी बेलोकर मुम्बई ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाइट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

पं. टोडरमलजी के 300वें जन्मजयंती वर्ष के अवसर पर प्रस्तुत है – ज्ञानपहेली

मोक्षमार्गप्रकाशक – अध्याय 3 (संसार दु:ख तथा मोक्षसुख का निरूपण)

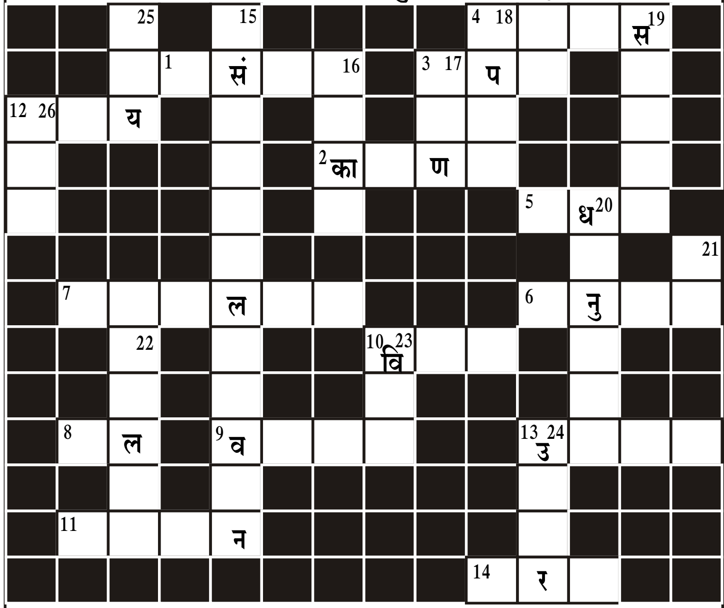

बाएं से दाएं –

1. दु:खों के मूल कारणों में से एक (4)
2. सुखी दु:खी होना बाह्य किसके आधीन है (3)
3. माया कषाय के उत्पन्न होने पर किस रूप अवस्था करता है (3)
4. असाता के उदय से शरीर में होने वाली एक चीज (4)
5. सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का ऐसा .... करने पर दु:ख दूर हो (3)
6. सिद्धपद का एक विशेषण (4)
7. मैं अनादि अनंत ज्ञायक स्वरूप आत्मा हूँ – ऐसा .... का तो अनुभव है नहीं (6)
8. एकेन्द्रिय जीव को पायी जाने वाली एक लेश्या (2)
9. निगोद किसका भेद है (4)
10. सिद्ध पद प्राप्त होने पर सुख होता है कि नहीं – इसका क्या करना है (3)
11. सिद्धों को सर्व सुख होने से शुभगति आदि का क्या नहीं रहा (4)
12. मोह के .... से मिथ्यात्व और कषायभाव होते हैं (3)
13. अन्तराय का एक भेद (4)
14. मन द्वारा रहता है (3)

ऊपर से नीचे –

15. एकेन्द्रिय में रहने का उत्कृष्ट काल (12)
16. दर्शनमोह के उदय से पुत्रादिक में अहंकार.......करता है (4)
17. यह उपाय करने से जो तेरा होगा (3)
18. हर अधिकार के अंत में जो पं.टोडरमलजी देते हैं (4)
19. मिथ्यात्व का अभाव होने पर जो प्राप्त होता है (5)
20. पुण्य का बंध जिससे होता है (5)
21. जिसके दूर होने पर सम्यक् श्रद्धान होता है (2)
22. दु:ख का लक्षण है (4)
23. किसी के बहुत ....है और इच्छा भी बहुत है (3)
24. रोग ही नहीं है तब ....क्यों करें? (4)
25. किस जनित सुख पराधीन है (3)
26. यह ....करने से तेरा कल्याण होगा (3)

प्रस्तुति – आप्तअनुशील शास्त्री, दमोह

हार्दिक बधाई!

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक एवं वरिष्ठ विद्वान **डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर** को इस महामारी के काल में विशेष सुरक्षा उपाय एवं जागृति अभियान चलाने पर **भारत सिने एण्ड टी.वी. राइटर्स एसोसिएशन** द्वारा **कोरोना वारियर्स** के सम्मान से सम्मानित किया गया। उपरोक्त संस्था द्वारा ही अमिताभ बच्चन, अक्षय कुमार, सोनू सूद आदि विभिन्न हस्तियों को भी इसी प्रकार सम्मानित किया गया है।

आप अपने यूट्यूब चैनल (Dr Deepak Jain Vaidya) के माध्यम से 'स्वास्थ्य के अहिंसक नुस्खे' एवं 'वर्तमान में जैन श्रावकाचार पालन' की विशेष जानकारी देते हैं।

टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई!

(पृष्ठ 1 का शेष...)

का जन्मदिवस भी कृतज्ञता दिवस के रूप में विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में मनाया गया, जिसमें दिगम्बर जैन समाज को बाबूभाई का क्या प्रदेय है, इसे याद करते हुए अतिथियों का उद्‌बोधन हुआ।

शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री केवलचंद जैन बजाज परिवार बाड़ी रायसेन, ध्वजारोहणकर्ता श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर, शिविर मंडप उद्‌घाटनकर्ता श्री सुनील शास्त्री अहिंसा डायमंड ग्वालियर थे।

कार्यक्रम का संचालन विद्यापीठ के प्राचार्य पण्डित दीपकजी शास्त्री 'ध्रुव' एवं पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा किया गया। मीडिया प्रभारी के रूप में श्री दीपकराज छिन्दवाड़ा, श्री सचिन मोदी खनियांधाना श्री प्रद्युम्न फौजदार बड़ामलहरा व सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

– दीपक शास्त्री 'ध्रुव' (प्राचार्य–नंदीश्वर विद्यापीठ खनियांधाना)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

इस अवसर पर सुरेन्द्र दास ने अकम्पनमुनीनाम् अलौकिक वृत्ति:, आदर्श जैन ने वात्सल्य अंग और मुनि विष्णुकुमार, हितंकर जैन ने कथानायक कौन और क्यों?, विकास जैन भिण्ड ने रक्षाबंधन का तात्त्विक बोध एवं निष्कर्ष जैन ने आखिर कैसे मनाएं रक्षा बंधन विषय पर अपने मनोगत व्यक्त किये।

मंगलाचरण चेतन जैन, संचालन अनिकेत जैन एवं आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

अपना नाम एवं पता सहित सही जवाब सादे कागज पर लिखकर भेजें, भेजने की अंतिम तिथि 10 सितम्बर 2020 है। प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार के अतिरिक्त 5 सांत्वना पुरस्कार भी दिये जायेंगे।

भेजने का पता– जैनपथप्रदर्शक ज्ञानपहेली, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15

वाट्सअप पर भेजने हेतु – 9660668506 (पीयूष कुमार जैन)

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ

6

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

३. उपचरित और अनुपचरित-दोनों ही प्रकार के असद्भूतव्यवहार नयों से इन्कार करने पर समस्त जिनवाणी के व्याघात का प्रसंग उपस्थित होगा; क्योंकि जिनवाणी में तो इनका कथन सम्यक्श्रुतज्ञान के अंश के रूप में आया है।

अत: इनकी सत्ता, उपयोगिता और सापेक्ष सम्यक्पने से इन्कार किया जाना संभव नहीं है।[१]

स्त्री-पुत्र, मकान-जायदाद, रुपया-पैसा, कुटुम्ब-परिवार, जाति व समाज तथा ग्राम, नगर व देश को अपना कहनेवाला उपचरित-असद्भूतव्यवहारनय सदाचार की सिद्धि करनेवाला नय है और शरीरधारी प्राणियों को ही जीव कहनेवाला अनुपचरित-असद्भूतव्यवहारनय अहिंसात्मक आचरण की सिद्धि करनेवाला नय है।[२]

लोक में अपने आत्मा से भिन्न जितने भी परपदार्थ हैं, उनमें अपने और पराये का भेद डालनेवाले इन नयों के आधार पर ही स्वस्त्री-परस्त्री, स्वधन-परधन, स्वगृह-परगृह, स्वजाति-परजाति, स्वदेश-परदेश एवं स्वदेह-परदेह आदि के भेद पड़ते हैं। यदि इन नयों की सत्यता से सर्वथा इन्कार किया जायेगा तो फिर परपदार्थों में इसप्रकार के भेद डालना संभव नहीं होगा।

इसप्रकार के भेद डाले बिना सदाचार-दुराचार एवं द्रव्यहिंसा को परिभाषित करना संभव न होगा; क्योंकि परस्त्री की लंपटता ही व्यभिचार है, बिना अनुमति के परधन का ग्रहण ही चोरी है तथा देहरूप प्राणों का घात ही द्रव्यहिंसा है। जब परपदार्थों में स्व-पर का विभाग ही नहीं होगा, ऐसी स्थिति में गृहस्थधर्म और अणुव्रतों की व्यवस्था कैसे बनेगी ? क्योंकि अणुव्रतों के पालन में गृहस्थ धर्मानुकूल-विवाहित स्वस्त्री को छोड़कर अन्य समस्त परस्त्रियों के सेवन का त्यागी होता है, न्यायोपात्त धन को परिमाणपूर्वक रखकर शेष धन का त्यागी होता है एवं त्रस जीवों की हिंसा का भी त्यागी होता है।

१. परमभावप्रकाशक नयचक्र, पृष्ठ-१४३-१४४
२. वही, पृष्ठ-१४४

इसीप्रकार ईर्यासमिति आदि समितियों में भी जीवों के प्राणों की रक्षा ही विवक्षित होती है। शरीरधारी प्राणियों के शरीरादि के घात को जीवहिंसा कहनेवाले अनुपचरित-असद्भूतव्यवहारनय को कथंचित् भी सत्यार्थ स्वीकार नहीं किया जाएगा तो फिर मुनिधर्म के सन्दर्भ में प्रतिपादित ईर्यादि समितियों की चर्चा भी असंगत हो जावेगी।

अणुव्रतादि रूप गृहस्थधर्म एवं महाव्रतादिरूप मुनिधर्म के प्रतिपादक चरणानुयोग का मूल आधार एकप्रकार से ये दोनों असद्भूत व्यवहारनय ही हैं।

यद्यपि परमार्थ तो यही कहता है कि स्त्री-पुत्रादि, मकान-जायदाद, नगर और देश अपने नहीं हैं; शरीर भी अपना नहीं है। गहराई से विचार करने पर यह बात पूर्णत: सत्य भी प्रतीत होती है, तथापि प्रथमानुयोग के शास्त्रों में तीर्थंकरों के भी स्त्री-पुत्रादि, मकान-जायदाद एवं नगर-देशादि बताये गये हैं। चक्रवर्तियों को छह खण्ड की विभूति का स्वामी जिनागम में बताया गया है।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को अयोध्यापति राजा नाभिराय एवं मरुदेवी का पुत्र, नन्दा-सुनन्दा का पति, भरत-चक्रवर्ती और बाहुबली आदि का पिता तथा अयोध्या का अधिपति कहना उपचरित-असद्भूतव्यवहारनय का ही प्रतिपादन है।

इसीतरह उन्हें पाँच सौ धनुष की कंचनवर्णी कायावाला वज्रवृषभनाराचसंहनन एवं समचतुरस्रसंस्थानवाला कहना अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनय का कथन है।

इन दोनों ही प्रकार के असद्भूतव्यवहारनयों को सर्वथा अस्वीकार करने पर प्रथमानुयोग के सभी कथनों पर पानी फिर जायगा; एकप्रकार से हमारा पौराणिक इतिहास ही समाप्त हो जायेगा।[१]

प्रश्न – जिनागम के व्याघात की बात एवं अणुव्रत-महाव्रत काल्पनिक ठहरने की बात तो ठीक, पर लौकिक मर्यादायें किसप्रकार संकट में पड़ेंगी ?

उत्तर – जब स्वस्त्री और परस्त्री का भेद नहीं रहेगा तब या तो हम सभी से स्वस्त्री के समान व्यवहार करेंगे या फिर परस्त्री के समान।

दोनों ही स्थितियों में व्यावहारिक मर्यादायें संभव न रह पावेंगी; क्योंकि सभी स्त्रियों में स्वस्त्रीवत् व्यवहार करने पर हमारी स्थिति पशुवत् हो जावेगी; माँ, बहिन, पुत्री और

१. परमभावप्रकाशक नयचक्र, पृष्ठ-१४६-१४७

पत्नी का भेद ही समाप्त हो जावेगा - ऐसी स्थिति में कौन किसकी संतान है - यह निश्चय न हो पाने के कारण पिता-पुत्र का व्यवहार असंभव हो जावेगा।

इसप्रकार कुल, गोत्र, जाति आदि सभी व्यावहारिक मर्यादाएँ लुप्त हो जावेंगी, जो शायद लोक में किसी को भी इष्ट न होगा।

इससे बचने के लिए यदि आप यह कहें कि हम सब से स्वस्त्रीवत् व्यवहार न करके, सभी से परस्त्रीवत् ही व्यवहार करेंगे, क्योंकि वे पर ही तो हैं। पर इससे भी समस्या का समाधान नहीं होगा, **फिर तो सभी को पूर्ण ब्रह्मचारी ही हो जाना होगा, क्योंकि स्वस्त्री तो कोई होगी नहीं और परस्त्री-सेवन आगमसंमत नहीं, नैतिक भी नहीं है।**

यदि आप कहें कि इसमें क्या आपत्ति है ? सभी ब्रह्मचारी हो जावें - इसमें क्या दिक्कत है ?

दिक्कत तो कुछ नहीं, पर असंभव अवश्य है। दूसरी बात यह भी तो है कि फिर तीर्थंकरों का भी जन्म कैसे होगा?

इसमें तो लौकिक मर्यादायें ही नहीं, लोक का क्रम संकटग्रस्त हो जावेगा।

इसीप्रकार स्वधन-परधन के विभाग के अस्त हो जाने पर सभ्यता का विकासक्रम ही समाप्त हो जावेगा; क्योंकि जब कोई मकान-जायदाद हमारी होगी ही नहीं तो हम उसका निर्माण ही क्यों करेंगे ?

पशुओं के समान ही छीनाझपटी आरंभ हो जावेगी। स्वगृह के समान ही सभी घरों में नि:शंक प्रवेश करने पर, स्वजेब के समान ही परजेब में नि:शंक हाथ डालने पर हमारी जो दशा होगी, उसकी कल्पना भी आसानी से की जा सकती है। **(क्रमश:)**

पाठकों के मनोभाव

संसार में जो भी दु:खी हैं, तत्त्व की उल्टी मान्यता के कारण ही हैं और तत्त्व के सच्चे स्वरूप को समझकर ही सुखी हो सकते हैं। ऐसे सच्चे तत्त्व का स्वरूप आदरणीय छोटे दादा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने संपूर्ण जैन समाज को समझाया है, इसीलिये उन्हें हम तत्त्ववेत्ता कहते हैं - इसका हमें अभिमान है।

उनकी नवीन कृति '**भरत का अन्तर्द्वन्द**' उनके जीवन का सार है, यह निश्चित ही संपूर्ण जैन समाज के लिये प्रेरणादायी सिद्ध होगी। इसकी कीमत कम करने हेतु सकल दिगम्बर जैन समाज वरुड बुडुक (महा.) की ओर से 21000/- की राशि स्वीकार करें। **- सन्मति जैन**

ई-रत्नत्रय विधान, व्याख्यानमाला एवं संगोष्ठी संपन्न

रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर, मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा, श्री दिव्य देशना ट्रस्ट दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन दिलशाद गार्डन दिल्ली द्वारा ब्राह्मी सुन्दरी कन्या विद्या निकेतन विश्वास नगर के सहयोग से दिनांक 31 जुलाई से 3 अगस्त तक ई-रत्नत्रय विधान तथा 'आत्मानुभूति एवं चिंतन' विषय पर व्याख्यानमाला व संगोष्ठी का ऑनलाइन आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सान्निध्य के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, डॉ. मुकेशजी 'तन्मय' विदिशा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, श्री जे.पी.दोशी मुम्बई, पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई, पण्डित सुनीलजी ग्वालियर, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, विदुषी राजकुमारीजी दिल्ली आदि विद्वानों द्वारा व्याख्यानों का लाभ मिला।

समारोह के अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, सभा अध्यक्ष श्री अजितजी दिल्ली, संगोष्ठी मुख्य आमंत्रणकर्ता श्री सुनील संजयजी सर्राफ सागर, ध्वजारोहणकर्ता श्री नरेन्द्रजी बाहुबली एन्क्लेव दिल्ली, मंच उद्घाटनकर्ता श्री मनीषजी जैन सूरजमल विहार दिल्ली, मुख्य कलश विराजमानकर्ता श्रीमती पारुल-राजेशजी जैन पुष्पांजलि एन्क्लेव दिल्ली, संगोष्ठी सह-आमंत्रणकर्ता श्री राकेशजी नोयडा, श्री इन्दरसेनजी सेन जैन विवेकविहार दिल्ली, श्री शैलेष दोषी एरनाकुलम कोचीन, अन्य सहयोगकर्ता श्री अजितजी बड़ौदा, श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री अशोकजी भोपाल, श्री राजूजी शाह बाडीवाल अहमदाबाद, श्री पदमजी पहाड़िया केशवजी कानपुर, श्री पदमजी पाटनी दुबई, श्री मित्रलालजी नेपाल, श्री अभयजी लखनऊ, श्री सुनीलजी गंगवाल एरनाकुलम, श्री अजितजी लखनऊ, श्री विनोदजी जैन यू.के. थे।

गोष्ठी के सूत्रधार व संयोजक श्री नीरजजी जैन कोचीन, सह-निर्देशक पण्डित संजयजी जेवर, संयोजक श्री वज्रसेनजी जैन, प्रधान सुरेन्द्रजी मिन्टु, मंत्री अतुलजी जैन, समन्वयक सुमितजी शास्त्री बढोत एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य थे। समस्त कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में संपन्न हुआ।

समस्त कार्यक्रम यूट्यूब चैनल एवं ज़ूम एप पर प्रसारित हुआ, जिसका लगभग 5-6 हजार साधर्मियों ने लाभ लिया।

स्वरूप ग्रहण की उग्रता चाहिए। कहीं भी चैन नहीं पड़े, विकल्प के जाल में भी चैन नहीं पड़े, कहीं भी सुख नहीं लगे, इतनी अंतर में उग्रता होनी चाहिए। स्वयं का अस्तित्व ग्रहण करे उसे सहज आनंद अंतर में से प्रगट होता है। **- (आत्मधर्म, अगस्त-2019 पृष्ठ 5 से साभार)**

क्रमबद्धपर्याय विद्वत्संगोष्ठी सानन्द संपन्न

श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल मकरोनिया-सागर एवं सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 8 से 11 अगस्त तक क्रमबद्धपर्याय विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसके आमंत्रणकर्ता श्री विनोदकुमार प्रमोदकुमार अरुणकुमार सुनीलकुमार मोदी एवं समस्त मोदी परिवार (दलपतपुर वाले) सागर थे।

इस अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के क्रमबद्धपर्याय (समयसार गाथा 308-311) पर तथा बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' अमायन (ऑडियो), पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. अरुणजी शास्त्री जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

गोष्ठी में पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री दौसा, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, श्री प्रमोदजी सागर, पण्डित जितेन्द्रजी राठी पूना, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई, पण्डित संयमजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जसवंतनगर, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित समर्थजी शास्त्री विदिशा, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री सागर, पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित नीतेशजी शास्त्री कोटा, पण्डित अखिलेशजी शास्त्री सागर, डॉ. विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा, पण्डित शुभमजी शास्त्री ज्ञानोदय, पण्डित अमनजी शास्त्री आरोन, विदुषी अनु शास्त्री दलपतपुर, शाश्वत बालिकाएं - अनुभूति जैन, मयूरी जैन, शालिनी जैन, महिमा जैन, समयसत्यप्रधान आदि के वक्तव्य हुए।

आठ सत्रों में आयोजित इस कार्यक्रम में अध्यक्ष व विशेषज्ञ विद्वान के रूप में पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, ब्र. हेमचंदजी हेम देवलाली, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित जे.पी. दोशी मुम्बई, डॉ. स्वर्णलताजी नागपुर, डॉ. ममताजी उदयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, ब्र. अमित भैया विदिशा, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर आदि महानुभाव उपस्थित थे; मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, श्री वीनूभाई शाह मुम्बई, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री अजितजी जैन बड़ौदा, श्री सुनीलजी सर्राफ सागर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री आदित्यजी सागर, श्रीमती सुषमा गुलझारीलालजी सागर, विदुषी बीनाजी देहरादून, विदुषी ममताजी दिल्ली, डॉ. शक्ति जैन सागर, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, श्री अशोकजी सेठ भोपाल, श्री विजयकुमारजी गुना, श्री मलूकचंदजी जैन विदिशा, डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल, श्री सुरेन्द्रजी मलैया जबेरा, श्री अशोकजी जैन नागपुर, इंजी. नेमीचंदजी ललितपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, श्री जयकुमारजी देवड़िया नागपुर, श्री संतोषजी महावीर जिनालय सागर, श्री पवनजी, ऋषभजी कर्रापुर वाले, श्री पवनजी मकरोनिया, श्री अशोकजी जबलपुर, पण्डित राजकुमार शास्त्री उदयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री जयपुर उपस्थित थे।

संचालक के रूप में पण्डित ऋषभजी शास्त्री व पण्डित सम्भवजी शास्त्री उस्मानपुर दिल्ली, श्री अरुणजी मोदी सागर, शाश्वत प्रज्ञा जैन व श्रीमती ज्योति-विपुल मोदी दलपतपुर, पण्डित आलोकजी शास्त्री व पण्डित संयमजी शास्त्री कारंजा, विदुषी प्रतीति मोदी व विदुषी दीक्षा आरोन, पण्डित अजितजी शास्त्री व पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री अलवर, विदुषी प्रज्ञा जैन देवलाली व श्रीमती ज्ञप्ति जैन मुम्बई उपस्थित थे।

प्रात:काल पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा पूजन-विधान एवं सायंकाल पण्डित समकितजी शास्त्री सागर द्वारा देव-शास्त्र-गुरु भक्ति का आयोजन किया गया।

मीडिया प्रभारी के रूप श्री अखलेश समैया सागर, श्री दीपकराज जैन छिन्दवाड़ा, श्री सचिन जैन खनियांधाना, श्री प्रद्युम्न जैन फौजदार बड़ामलहरा का सहयोग प्राप्त हुआ। साथ ही प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोगियों व श्रोताओं का बहुत-बहुत आभार। संचालन पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर ने किया।

कार्यक्रम का प्रसारण सर्वोदय अहिंसा के यूट्यूब चैनल पर हुआ, जिसके संचालन में पण्डित विनीत शास्त्री हटा, पण्डित वीतराग शास्त्री नागपुर एवं शाश्वत संजय राऊत औरंगाबाद का सहयोग प्राप्त हुआ।

समस्त आयोजन डॉ. राकेशजी नागपुर के निर्देशन एवं श्री अरुणजी मोदी मकरोनिया सागर के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ। **– प्रमोद मोदी, सागर**

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 13 अगस्त 2020

प्रति,